परमात्मा का परिचय


ARNATH IN KASHMIR
सर्व आत्माओं के पिता
GOD IS KINDLY LIGHT.
परमात्मा ज्योति है
JEHOVA(SHIVA)
GOD FATHER, THE EVER-TRUE, SHIVA THE ETERNAL GOOD THE EVER-BENEFICIAL
जापान में
BUDDHIST
CHINKONSEKI
A WAY OF MEDITATION IN JAPAN
MOSES ON THE MOUNT
देहि शिवा
GOD IS INCORPOREAL
GOD THE HIGHEST THE MOST MERCIFUL.
संगे-असवद्
GURU NANAK

परमात्मा का परिचय

BRAHMA KUMARIS
1A, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata—700020
Ph—033-24753521

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
आबू पर्वत (राजस्थान)

स्वयं परमपिता परमात्मा शिव ने
प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा जो ज्ञान दिया और दे रहे हैं
उसे ही इस पुस्तक के रूप में
संकलित और सम्पादित किया गया है।

लेखक :
ब्र.कु. जगदीशचन्द्र

प्रकाशक एवं मुद्रक:
साहित्य विभाग,
ओमशान्ति प्रेस, ज्ञानामृत भवन,
शान्तिवन, आबू रोड – 307 510

पुस्तक मिलने का पता:
साहित्य विभाग,
पाण्डव भवन, आबू पर्वत – 307 501

कापी राइट:
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय,
पाण्डव भवन, आबू पर्वत – 307 501
राजस्थान, भारत ।

अमृत सूची

परमात्मा कौन?

संसार में परमात्मा शब्द से सम्भवत: कोई भी व्यक्ति अपरिचित होगा, परन्तु परमात्मा के वास्तविक परिचय अथवा यथार्थ ज्ञान से सभ मनुष्यात्माएँ अब तक अनभिज्ञ रही हैं। प्रत्येक मनुष्य अपने शारीरिक पित के नाम, रूप और कर्त्तव्य आदि को जानता है, नगरवासी अपने महापौ (Mayor or City-father) का बोध रखते हैं, सभी प्रान्तवासी अप राज्य के राज्यपाल (Governor) से अवगत होते हैं तथा सभी देशवास भी अपने देश के राष्ट्रपति (President) को जानते हैं, इसी प्रकार सा विश्व के विश्व-अधिकारी का अस्तित्व भी अनिवार्य है। परन्तु क्या इ विश्व में रहने वाले सभी मनुष्यात्माओं को उस विश्व-अधिकारी परमपित परमात्मा का ज्ञान है? आश्चर्य की बात है कि जीवात्माएँ अपने सभ लौकिक एवं विनाशी सम्बन्धों को तो भली-भाँति जानती हैं, परन्तु अप परलौकिक अविनाशी परमपिता परमात्मा को पूर्णतया भूल चुकी हैं।

इसी अज्ञानवश सर्व आत्माओं का सम्बन्ध अथवा योग ठीक प्रक परमात्मा से न जुटा रहने के कारण वे अपने ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिका सम्पूर्ण पवित्रता, सुख, शान्ति एवं शक्ति से वंचित रही हैं। (क्योंकि ज्ञा बिना प्राप्ति नहीं हो सकती), अपितु जन्म-जन्मान्तर वेद, पुराण तथा शा आदि का पठन-पाठन एवं मनन-चिन्तन तथा जप, तप, तीर्थ, यज्ञ, हव संध्या, दान तथा पुण्य करते हुए भी दिन प्रतिदिन दु:खी, अशान्त त पतित ही बनती गई हैं। जिस प्रकार एक बल्ब का मेल अथवा योग यथ रीति से बिजलीघर (Power House) से न होने के कारण उसमें कदाचि भी प्रकाश एवं शक्ति का संचार नहीं हो सकता।

आज दिन तक जो भी ऋषि, मुनि, सन्त, संन्यासी, भक्त और धर्म-संस्थापक आदि होकर गए हैं, उन्होंने परमात्मा के गुणों की अपार महिमा की है फिर भी 'परमात्मा कौन है?' इसका संतोष-जनक एवं सत्य ज्ञान प्राप्त न कर सके जो कि अब तक भी सबके लिए गुह्य पहेली बनी हुई है। यदि जन-साधारण से यह पूछा जाय कि परमात्मा कौन है? तो उत्तर में यही सुनने को मिलेगा कि वह एक शक्ति है, वास्तव में शक्ति तो परमात्मा का गुण है और गुण के होते गुण को धारण करने वाले 'गुणी' का अस्तित्व न हो यह कैसे सम्भव हो सकता है! जिस प्रकार सुगन्धि और मिठास आदि गुण किसी वस्तु-विशेष के ही होते हैं। अतः गुणों का निजी रूप नहीं होता तो इसका अर्थ यह नहीं कि गुणी भी अपने निजी-रूप से रहित हो। जिस प्रकार एक फूल का नाम-रूप तो अवश्य होता है परन्तु उसकी सुगन्धि का कोई अपना निजी आकार नहीं होता।

परमात्मा का रूप



किसी वस्तु का रूप स्थूल आँखों से दिखाई न देता हो-यह तो हो सकता है, परन्तु किसी का अस्तित्व हो और रूप उसका हो ही नहीं-यह बात असम्भव है। इसी प्रकार परमात्मा भी अरूप नहीं है। उस दिव्य एवं अव्यक्त सत्ता का रूप अवश्य है, परन्तु वह भी दिव्य एवं अव्यक्त होने के कारण दिव्य-चक्षु से ही देखा जा सकता है। परमात्मा को निराकार कहने का अर्थ यह नहीं कि उसका कोई रूप ही नहीं है। वास्तव

में निराकार शब्द सापेक्ष है, अर्थात् अन्य आत्माओं के दैहिक रूप की तुलना में उसका प्रयोग किया जाता है। अन्य आत्माएँ तो स्थूल अथवा सूक्ष्म शरीर धारण करती हैं, परन्तु परमात्मा जन्म-मरण से न्यारा है। जो आत्माएँ स्थूल देह धारण किये रहती हैं उन्हें सूक्ष्माकारी देवता अथवा आकारी देवता कह सकते हैं। परम-आत्मा का अपना न कोई साकारी शरीर है और न ही कोई सूक्ष्म अथवा आकारी शरीर है, इसलिए उसको निराकार कहा जाता है। अत: निराकार का अर्थ है-अकाय अव्यक्त, अशरीरी। परमात्मा रूप से न्यारे नहीं, उनका रूप न्यारा है, परमात्मा का दिव्य रूप 'ज्योति बिन्दु' अर्थात् ज्योति के आकार जैसा रूप है। जैसा कि चित्र में भी दिखाया गया है।

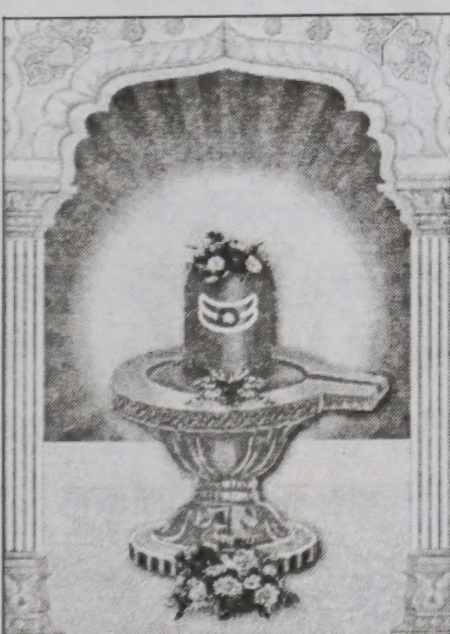
परमात्मा का नाम

संसार में जितनी भी देहधारी मनुष्यात्माएँ हैं, उनका नाम देह के आधार पर रखा जाता है। वर्तमान देह धारण करने पर अर्थात् वर्तमान जन्म लेने पर उनका जो नाम रखा गया था, अगले जन्म में उनका प्राय: वह नाम नहीं होगा। बल्कि ब्राह्मण, माता, पिता या कोई महात्मा उनका कोई दूसरा नाम रख देते हैं। इस प्रकार, देह बदलने के साथ-साथ मनुष्यात्माओं का नाम भी बदलता रहता है। स्पष्ट है कि सभी मनुष्यों का भी नाम विनाशी है एवं देह पर आधारित है। परन्तु परमात्मा तो अशरीरी हैं और पुनर्जन्म-मरण के चक्कर में नहीं आते तो उसका नाम भी अविनाशी, अपरिवर्तनीय और दिव्य है। इस कारण यह कहना अयथार्थ है कि 'परमात्मा' नाम से न्यारा है। हाँ, यह कहा जा सकता है कि परमात्मा का नाम न्यारा है। व

दिव्य-नाम है - शिव! शिव का अर्थ है (१) कल्याणकारी, (२) बीज-रूप (३) बिन्दु। क्योंकि परमात्मा सारी सृष्टि का सदगति-दाता है इसलिए वह कल्याणकारी है। जिस प्रकार बीज किसी वृक्ष का रचयिता होता है उसी प्रकार परमात्मा शिव भी सृष्टि-रूपी वृक्ष का निमित्त कारण है। क्योंकि परमात्मा का रूप ज्योति-बिन्दु समान है। इससे स्पष्ट है कि शिव नाम उसका बिल्कुल यथार्थ है।

परमात्मा का स्मरण चिह्न शिवलिंग

सभी महान् विभूतियों की स्मृति बनाए रखने के लिए उनके स्मारक चिन्ह, मूर्तियाँ और मन्दिर आदि बनाए जाते हैं। परन्तु संसार में सब मूर्तियों में अधिक पूजा सम्भवत: शिवलिंग की ही होती है। विश्व में शायद ही कोई ऐसा देश होगा जहाँ शिवलिंग की पूजा न हुई हो। शिव का शाब्दिक अर्थ है कल्याणकारी बीज-रूप परमात्मा और लिंग का अर्थ है-प्रतिमा। अत: शिवलिंग का अर्थ हुआ -कल्याणकारी परमपिता परम-आत्मा की प्रतिमा। प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों (जो कि प्राकृतिक रूप से ही प्रकाशवान होते हैं) के बनाए जाते थे क्योंकि परमात्मा का रूप ज्योतिबिन्दु है। सोमनाथ के प्रसिद्ध मंदिर में सर्वप्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे कोहेनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी



आकार में मान्यता दी जाती है चाहे वे पत्थर, हीरों अथवा अन्य धातुओं की स्थायी रूप में मूर्तियाँ स्थापित न भी करें परन्तु फिर भी पूजा, पाठ, प्रार्थना अथवा अन्य पवित्र अवसरों पर ज्योतिस्वरूप परमप्रिय परमात्मा की स्मृति के रूप में अपने घरों अथवा धार्मिक स्थानों-मन्दिरों और गुरुद्वारों आदि में दीपक अथवा ज्योति अवश्य जलाते हैं। भारत में शिव के १२ अति प्रसिद्ध मठों को भी ज्योतिर्लिंगम मठ कहा जाता हैं। इनमें से हिमालय स्थित केदारेश्वर और सौराष्ट्र प्रदेश में सोमनाथ और मध्य प्रदेश के उज्जैन शहर में महाकालेश्वर अति प्रसिद्ध हैं।

भारत के बाहर भी निकट तथा दूरवर्ती देशों में हिन्दूमत से भिन्न अन्य मतों के अनुयायी लोग भी शिवलिंग की मूर्ति को बहुत सम्मान देते रहे हैं। यद्यपि आज ईसाई, मुसलमान, बौद्ध तथा दूसरे मतों के लोग शिवलिंग की उतनी और उस रीति से पूजा नहीं भी करते जैसे कि हिन्दू लोग, तो भी ऐसे बहुत से प्रमाण मिलते हैं, जिनसे वर्तमान समय में भी अनेक विभिन्न धर्मों वाले लोग शिवलिंग को धार्मिक महत्त्व देते हैं। उदाहरण के रूप में रोम देश में ईसाई धर्म रोमन कैथोलिक लोग इस अण्डाकार रूप के पत्थर को आज तक भी पूजते हैं। अरब देश में मक्का नाम के तीर्थस्थान पर मुसलमान यात्री आज भी, इसी आकार के पत्थर को जिसे संग-ए-असवद या मक्केश्वर कहा जाता है, चूमते हैं। जापान में रहने वाले बौद्ध धर्म के कई लोग जब साधना करने बैठते हैं तो अपने सम्मुख शिवलिंग जैसा एक पत्थर तीन फुट दूरी पर एवं तीन फुट ऊँचे स्थान पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए रखते हैं। इज़राइल तथा यहूदियों के दूसरे देशों में भी यहूदी लो

कोई शपथ लेते समय रस्म के तौर पर ऐसे पत्थर को छूते हैं। इसके अतिरिक्त प्राचीन और प्रसिद्ध देश मिस्र (Egypt) के फ्नेशिया नगर में, ईरान के शहर सीरिया में, पीरूहयती (Hyati) के द्वीप, सुमात्रा और जावा द्वीप आदि-आदि के विभिन्न भागों में भी शिव की यह पार्थिव यादगार देखने में आती है।

यही नहीं बल्कि स्काटलैंड के प्रमुख शहर ग्लासगो में, तुर्किस्तान में ताशकंद में, वैस्ट-इण्डीज़ के नगर गियाना में तथा लंका और स्याम में, मारीशस और मैडागास्कर में भी शिवलिंग का पूजन होता है।

अनेक धर्मो में मतभेद बढ़ जाने के कारण अन्य देशों में शिवलिंग की लोकप्रियता पहले के समान न भी रही हो परन्तु भारत में, जहाँ से इसकी पूजा प्रारम्भ होकर बाहर गई, आज भी लोगों को यह अति प्रिय है। श्री रामचन्द्र जी को रामेश्वर में, श्री कृष्ण जी को गोपेश्वर में तथा अन्य देवताओं को भी उन सबका परमपूज्य ईश्वर-शिव को दर्शाने के लिए शिवलिंग की पूजा करते दिखाया है। अतः यह निस्सन्देह स्वीकार करना पड़ेगा की सारी सृष्टि की आत्माओं, चाहे वह किसी भी धर्म अथवा सम्प्रदाय की हों का एक्मात्र परमप्रिय परमपिता परमात्मा ज्योतिबिन्दु शिव ही है।

शिव के विषय में भ्रान्तियाँ

वर्तमान समय भी यद्यपि भारत में शिवलिंग की पूजा की काफी व्यापकता है तो भी शिव के बारे में ऐसी बहुत सी अनापशनाप कथाएँ प्रचलित हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि लोग अपने मुख्य परमात्मा शिव, जिस की यादगार लिंग रूप में हैं के विषय में कुछ भी नहीं जानते। शिव

के बारे में बहुत-सी पौराणिक कथाएँ द्वापर और कलियुगी लेखकों की कल्पना पर ही आधारित हैं और अतिशयोक्ति, मिलावट तथा मन-घड़न्त वृत्तांतों से ही भरपूर नहीं बल्कि ऐसी है, जिनसे कि शिव पर मिथ्या-दोष आरोपित होते हैं। इस प्रसंग में, शिव का पार्वती पर मोहित होना, दक्ष प्रजापिता का चन्द्रमा के साथ अपनी २७ कन्याओं का विवाह करना तथा बाद में उसे श्राप देना इत्यादि कहानियाँ, किस्से और गप्पें नहीं तो और क्या हैं? परमपिता शिव और उनकी रचना-ब्रह्मा, विष्णु, शंकर-के विषय में अज्ञान होने के ही परिणाम-स्वरूप, लोग मतभेद में पड़ कर, इनके विषय में काम-वासना से भरपूर कलंक लगाते हैं और कभी विष्णु को परमात्मा सिद्ध करने के विचार से ब्रह्मा और शंकर की ग्लानि करते अथवा किन्हीं दो देवताओं में युद्ध इत्यादि की दन्तकथाएँ प्रचलित कर देते हैं। दूसरी एक और ध्यान देने योग्य बात यह है कि अज्ञान के कारण ही भक्त लोग शिव और शंकर को एक ही सत्ता समझते आए हैं। (शिव एवं शंकर में भेद क्या है? यह आगे स्पष्ट किया गया है) बल्कि तमोप्रधान बुद्धि होने के कारण कई तो शंकर को एक व्यक्त मनुष्य समान मान कर शिव को शंकर का लिंग समझ पूजते आए हैं। खेद है भारत के लोगों की ऐसी तुच्छ अथवा क्षुद्र-बुद्धि पर।

परमात्मा और आत्माओं में अन्तर

परमात्मा (परम+आत्मा) शब्द ही सिद्ध करता है कि आत्मा बहुसंख्या में है जिसमें अमुक आत्मा (परमात्मा) का अस्तित्व भिन्न ए सर्वोच्च है। जैसे प्रधान मंत्री, (प्रधानमंत्री) ज्येष्ठ पुत्र (ज्येष्ठ पुत्र) आ

शब्दों की सार्थकता भी तभी है जब कि अन्य मंत्री भी हों जिसमें उनका स्तर, अधिकार और कर्त्तव्य आदि प्रधान हों, अथवा अन्य पुत्र भी हैं जिनमें अमुक ज्येष्ठ हैं। बहुत लोगों की यह विचारधारा है कि आत्माएँ परमात्मा के अंश हैं और सबको एकत्रित रूप में परमात्मा कहा जाता है, जिस प्रकार पानी की अनेक बूंद मिल करके सागर कहलाता है, परन्तु परम शब्द गुणवाचक (Qualitative) है न कि परिमाण वाचक (Quantitative)। जिस प्रकार किसी को जब महात्मा (महान + आत्मा) अथवा महापुरुष की उपाधि दी जाती है तो इसका अर्थ यह नहीं है कि आत्मा व स्थूल शरीर की आकृति (आकार, size)में वह बड़ी है, परन्तु दूसरों की भेंट में उसके गुण एवं कर्त्तव्य महान अथवा श्रेष्ठ हैं!

जबकि आत्मा एवं परमात्मा दोनों चैतन्य सत्ताओं का अस्तित्व अनादि और अविनाशी है तो इनके अंश होना कैसे सम्भव हो सकता है। हाँ सब आत्माएँ परमापिता परमात्मा की सन्तान (वंश) होने के कारण उनमें पिता के ईश्वरीय गुणों की पवित्रता, सुख, शान्ति आदि का कुंछ अंश पैतृक सम्पत्ति के रूप में विद्यमान हो सकता है। अत: परमात्मा और आत्माएँ भिन्न-भिन्न सत्ताएँ हैं, परमात्मा एक हैं और आत्माएँ अनेक हैं। आत्मा पावन होकर महात्मा, धर्मात्मा अथवा देवात्मा (सर्वगुण सम्पन्न, १६ कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी) बन सकती है, परन्तु परमात्मा बन जाना अथवा अपने अस्तित्व को परमात्मा में मिला देना असम्भव ही नहीं अपितु मिथ्या विचार है। परमात्मा के लिए एक वचन और आत्माओं के लिए बहुवचन ही प्रयोग होता है जैसे आत्माओं, महात्माओं, देवताओं आदि कहने में

आता है, न कि परमात्माओं। अतः परमात्मा एक है और अन्य आत्माएँ कभी स्वयं को परमात्मा नहीं कहला सकतीं। स्वयं को शिव मानना अथवा शिवोऽहम् या अहम् ब्रह्मास्मि कहना महान भूल है।

प्रायः देखने में आता है कि शिवलिंग के साथ उसी रूप की परन्तु छोटी आकृति के पत्थर की बहुत-सी प्रतिमाएँ जिन्हें शालीग्राम कहते हैं का पूजन भी होता है। जिस प्रकार शिवलिंग परमात्मा शिव का चिन्ह है, इसी प्रकार शालीग्राम विभिन्न आत्माओं के सूचक हैं। यूँ तो सभी आत्माओं और परमात्मा के गुणों एवं संस्कारों में भिन्नता है परन्तु रूप और आकृति सबकी एक-जैसी ज्योति-बिन्दु समान है। केवल परमात्मा की परम सत्ता को प्रकट करने के लिए मूर्तियों में शिव का रूप शालिग्रामों से बड़ा दिखाया जाता है।

आत्माएँ जन्म-मरण के चक्कर में आती हैं अर्थात् पुनः जन्म लेती हैं परन्तु परमात्मा का सृष्टि - चक्कर में कल्प के अन्त में केवल एक ही बार दिव्य एवं अलौकिक अवतरण (स्पष्टीकरण के लिए पृष्ठ न. २४ देखिये) होता है। आत्माएँ सृष्टि-चक्कर के आदि में पावन रहती हैं और आगे चलकर पतित बन जाती हैं, परन्तु पतित पावन परमात्मा सदाशिव सदा ही पावन रहते हैं।

परमात्मा का कर्त्तव्य एवं त्रिदेव की रचना

कर्त्तव्य से ही किसी की महिमा अथवा महानता प्रकट होती है परमपिता परमात्मा शिव सारी सृष्टि का पिता होने के कारण उसका दिव्य एवं कल्याणकारी कर्त्तव्य भी समस्त विश्व के लिए होता है। साधारणतया कि



से यह प्रश्न पूछा जाय कि परमात्मा क्या करता है? तो उत्तर बहु सम्मति से यही होगा कि संसार में सब कर्म परमात्मा की शक्ति से ही होते हैं और बिना उसके हुक्म के एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। यह थोड़ी गम्भीरतापूर्वक विवेक से सोचने की बात है कि संसार में तो अच्छे व बुरे दोनों ही प्रकार के कर्म होते रहते हैं, बुरे कर्मों का फल दु:खदायी एवं अच्छे कर्मों का फल सुखदायी होता है तो क्या परमात्मा भी बुरे कर्म कराता है जिससे कि अन्य आत्माओं को दु:ख प्राप्त हो? मान लीजिए, कोई आवेश में आकर किसी अन्य व्यक्ति को छुरा घोंप देता है तो क्या इस हिंसक कर्म का कर्त्ता भी परमात्मा को माना जाय? परमात्मा को सदा सुख-कर्त्ता दु:ख-हर्त्ता कहा जाता है तो उसके कर्मों में कभी दु:ख विद्यमान नहीं हो सकता। यदि पाप-कर्म अथवा पुण्य-कर्म परमात्मा ही कराता है तो इसका बुरा व अच्छा फल आत्माएँ क्यों भोगती हैं? जबकि विधान के अनुसार कहा गया है कि जो करेगा सो पावेगा और जैसा करेगा वैसा पावेगा। अत: यह स्मरण रहे कि प्रत्येक आत्मा कर्म करने में पूर्णतया स्वतंत्र है न कि परमात्मा के हाथ में वह कोई कठपुतली की तरह है। परमात्मा का नाम, रूप और गुण अन्य लौकिक मनुष्यों से भिन्न हैं तो उसका कर्म भी लौकिक न होकर अलौकिक ही होना चाहिए। परन्तु बहुत-से लोग यह

समझते हैं कि संसार में फल,फूल, पेड़, पौधे आदि सबकी तो उत्पि पालना और विनाश ईश्वर ही करता है परन्तु यह सब तो अनादि प्राकृति नियमों के अनुसार होता है, यह कोई परमात्मा का कर्त्तव्य नहीं मनुष्यात्मा का जन्म लेना, जीना एवं मरना भी उसके अपने कर्मों पर आधारित होता है।

यदि किसी के घर बच्चा पैदा हो, तो लोग समझेंगे कि यह ईश्व दिया है; यदि वह कुछ दिनों बाद मर गया तो भी समझेंगे कि उसका क रूप भी परमात्मा ही है। ईश्वर के यह परिमित एवं एक-एक मनुष्य के व्यक्तिगत कर्म नहीं होते, उसके कर्म तो समष्टिगत एवं अपरिमित होते वास्तव में परमात्मा का कर्त्तव्य तो सारे सृष्टि-चक्कर में एक ही बार ह है, जब सारे संसार की दशा विकारों के कारण बिल्कुल ही दुःख अशान्ति की चरम सीमा पर पहुँच जाती है तब ही वह आकर पुनः उ कल्याण एवं सद्गति करता है। उसको कहा ही जाता है कि वह बि को बनाने वाला अथवा पतित-पावन है। इस उद्देश्य को सम्पन्न करन लिए उसको तीन अलौकिक कार्य करने की आवश्यकता पड़ती है।

१. ज्ञान द्वारा सत्यता, पवित्रता और शान्ति की स्थापना।

२. असत्यता, अपवित्रता और अशान्ति का विनाश।

३. धर्म - परायण, पवित्र आत्माओं का पालन तथा उनकी वृ

जिस प्रकार किसी देश के राष्ट्रपति के नीचे मन्त्रीगण रहते हैं, उ उसके आदेश से विभिन्न विभागों का कार्यभार सम्भालते है उसी क करन-करावनहार निराकार परम-आत्मा शिव भी इन तीन कर्त्तव्यों को

के लिए तीन सूक्ष्म-आकारी देवताओं-ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर (जिनके द्वारा क्रमशः स्थापना, पालना एवं विनाश का कार्य करवाते हैं) को रचते हैं। इसीलिए परमात्मा शिव को ''त्रिमूर्ति'' कहा जाता है। इसके बारे में कई प्रमाण भी मिलते हैं।

१. शिवलिंग पर जो त्रिपुण्ड लगाते हैं उसकी तीन रेखाएं शिव के त्रिमूर्ति होने की सूचक हैं।

२. शिव पर जो बेल-पत्र चढ़ाते हैं उनकी तीन पत्तियाँ शिव के त्रिमूर्ति होने की द्योतक हैं।

३. शिवलिंग को बहुत स्थानों पर ऊंकार-लिंग भी कहा जाता है। औ३म् शब्द में तीन अक्षर अ, उ, म, परम आत्मा शिव के ब्रह्मा, विष्णु, एवं शंकर द्वारा स्थापना, पालना एवं विनाश के दिव्य कर्त्तव्यों को तथा चन्द्रबिन्दु (ँ) स्वयं ज्योति-बिन्दु परमापिता परमात्मा त्रिमूर्ति शिव को स्पष्ट करता है।

४. परमात्मा को अन्य धर्मों एवं भाषाओं में जिन शब्दों में सम्बोधित किया जाता है, वह भी प्रायः तीन अक्षर ही होते हैं जैसे ओ३म्, GOD आदि। GOD शब्द में तीन अक्षर G, O तथा D भी परमात्मा के तीन कार्य स्पष्ट करते हैं। G – Generation (उत्पत्ति), O – Operation (समृद्धि-वृद्धि-पालन) D – Destruction (विनाश)।

५. वर्तमान भारत सरकार का राजनैतिक चिह्न (Coat of Arms), जिसमें त्रिमूर्ति शेर भी वास्तव में, तीन आकारी देवताओं ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर को न जानने के कारण ही बना दिए गए हैं।

स्मरण रहे कि इन तीन आकारी देवताओं ब्रह्मा, विष्णु एवं शंक
निजि अपना-अपना अस्तित्व है और परमात्मा शिव जो इन तीनों



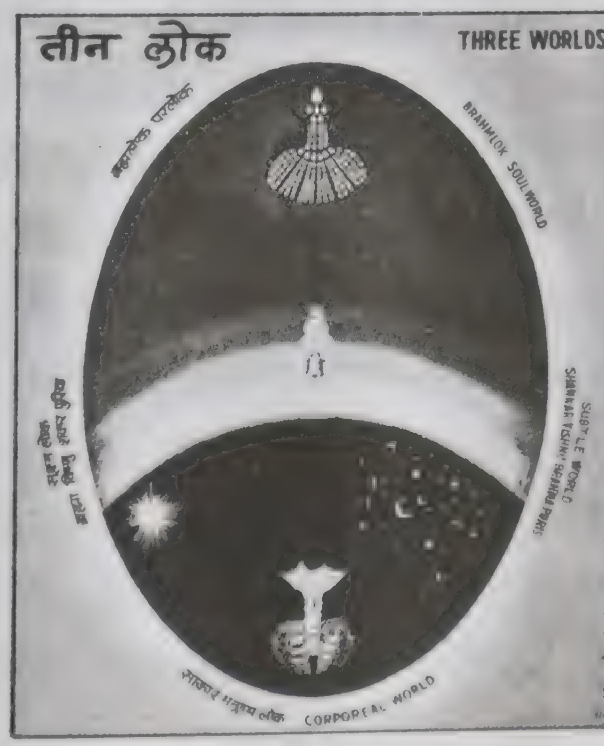
रचयिता है, उसकी
इनसे भिन्न है।
लोग शिव और
को एक ही सत्ता
नाम समझते है,
शिव और शंकर
में एक नही है।
तो परमात्मा शि
त्रिदेव रचना में स
है। शंकर सूक्ष्माकारी रूप वाले हैं और शिव निराकारी है, शिव कल्या
परमपिता का नाम है और शंकर आकारी देवता है जो कि तमोगुणी,
सृष्टि का विनाश करवाने के निमित्त है। कई चित्रों मे शंकर और पार्व
शिवलिंग के सम्मुख बैठा दिखाया है जिसमें शंकर, शिवलिंग क
संकेत करते हुए पार्वती को भी प्रेरित करते है कि वह अपनी योग
में शिव पर मनन करे। इससे भी शिव एवं शंकर का भेद स्पष्ट प्रत
जाता है। इन दो का नाम मिश्रित हो जाने का कारण एक और भी
है कि भारतवर्ष के बहुत-से प्रान्तों में सौराष्ट्र, गुजरात, सिन्ध आदि मे
व्यक्ति का नाम लेते समय उसके पिता का नाम भी साथ मे मिश्रित
है जैसे मोहनदास करमचन्द गांधी मे पिता और पुत्र का नाम मिश्रित है

पद्धति के अनुसार लोग प्रायः शिव शंकर भोलानाथ का नाम भी इकट्ठा लेते हैं, परन्तु इस बात को बिल्कुल भुला दिया है कि शिव और शंकर, रचयिता और रचना के रूप में दो अलग-अलग सत्ताएँ हैं।

अतः ब्रह्मा, विष्णु, शंकर तीनों सूक्ष्माकारी (बिना हड्डी माँस के) देवता हैं, जिनको भी दिव्य-दृष्टि द्वारा ही देखा जा सकता है। इनको परमात्मा नहीं कह सकते अपितु इनके भी रचयिता परमात्मा शिव ही है।

परमात्मा का धाम एवं तीन लोक का स्पष्टिकरण

परमात्मा को जहाँ त्रिमूर्ति (तीन देवताओं का रचयिता), त्रिनेत्री (दिव्य-बुद्धि रूपी ज्ञान का तीसरा नेत्र देने वाला), त्रिकालदर्शी (सृष्टि के आदि, मध्य तथा अन्त, तीनों कालों का ज्ञाता) आदि कहते हैं तो वहाँ त्रिलोकीनाथ अथवा त्रिभुवनेश्वर भी कहने में आता है। अतः तीन लोकों का अस्तित्व भी अवश्य होना चाहिए।



१. एक तो यह मनुष्य-सृष्टि अथवा स्थूल-लोक जिसमें हम रह रहे हैं, यह आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इन पाँच तत्वों की सृष्टि है इसे कर्म-क्षेत्र भी कहते हैं

क्योंकि यहाँ मनुष्य जैसा कर्म करते हैं वैसा फिर भोगते भी अवश्य हैं

इस लोक में बसने वालों का हड्डी-माँस आदि का पिण्ड अथवा शरी होता है। इसी लोक में ही जन्म-मरण हैं। अतः इस सृष्टि को विरा नाटकशाला अथवा लीलाधाम (जिसमें कि सूर्य और चाँद मानो बड़ी-ब बत्तियाँ हैं) भी कहा जा सकता है। इस सृष्टि में संकल्प, वचन तथा क तीनों ही हैं। यह सृष्टि आकाश तत्व के अंशमात्र में है। स्थापना, विना और पालना आदि परम-आत्मा के दिव्य कर्त्तव्य इसी लोक सम्बन्धित हैं।

२. सूर्य चाँद से भी पार, इस मनुष्य लोक के आकाश-तत्व के ऊपर, एक और अति सूक्ष्म (अव्यक्त) लोक है जिसमें पहले सफेद के प्रकाश-तत्व में ब्रह्मापुरी, उसके ऊपर सुनहरे-लाल (Golden Re प्रकाश में चतुर्भुज विष्णु की पुरी और इसके भी पार महादेव शंकर की है। इन तीनों देवताओं की पुरियों को मिला कर इसे सूक्ष्म लोक कहते क्योंकि देवताओं के शरीर, वस्त्र और आभूषण आदि मनुष्यों के स्थूल श और वस्त्र आदि की तरह पाँच तत्वों से बने हुए नहीं हैं बल्कि सूक्ष्म प्रक तत्व के हैं। इन देवताओं को अथवा इनके लोकों को,इन स्थूल नेत्रों से देखा जा सकता, बल्कि दिव्य-चक्षु द्वारा ही इनका साक्षात्कार हो सकत इन पुरियों में संकल्प तथा गति (Movements) तो है, परन्तु वहाँ व अथवा ध्वनि नहीं है। यहाँ मुख द्वारा बोलते तो हैं परन्तु मनुष्य लोव बोलने पर जो ध्वनि होती है, वहाँ वह नहीं होती। इस लोक में मृत्यु, दु या विकारों का नाम-निशान नहीं होता। धर्मराजपुरी भी इसी सूक्ष्मलो

ही है।

३. देवताओं के सूक्ष्म लोक से भी ऊपर एक असीमित रूप से फैला हुआ तेज सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है। जिसको अखण्ड ज्योति महा-तत्व अथवा ब्रह्म-तत्व कहते हैं। यह तत्व पाँच प्राकृतिक तत्वों क्रमशः पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से भी अति सूक्ष्म है। जिसका भी साक्षात्कार दिव्य-चक्षु द्वारा ही हो सकता है। इस ब्रह्मतत्व में अंश-मात्र में ज्योति-बिन्दु-रूप त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव और सभी अन्य धर्मों की आत्माएँ अपने-अपने संस्थान (Sections) के आत्माओं में अव्यक्त वंशावली वृक्ष (Genealogical Tree) के रूप में निवास करती हैं। इस स्थान को ब्रह्मलोक, परलोक, मुक्तिधाम, शान्तिधाम, निर्वाणधाम, मोक्षधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। इस लोक में न संकल्प है, न कर्म है। अतः वहाँ न सुख है, न दुःख है, बल्कि इन दोनों से एक न्यारी अवस्था है। इस लोक में अपवित्रता अथवा विकार बिल्कुल नहीं हैं। पवित्रधाम में कोई अपवित्र अथवा कर्म-बन्धन वाला शरीर नहीं जा सकता। यहाँ आत्मा भी अकर्त्ता, अभोक्ता और निर्लिप्त अवस्था में होती है। यहाँ हर एक का मन लीन, शान्त अथवा बीज-रूप अवस्था में होता है। सृष्टि-लीला की अनादि तथा निश्चित योजना के अनुसार जब किसी आत्मा का सृष्टि रूपी रंग-मंच पर पार्ट होता है तभी वह नीचे साकार लोक में आकर शरीर-रूपी वस्त्र धारण कर अपना अभिनय (Part) करने के लिए उपस्थित होती है।

प्रायः दुःख अशान्ति के समय जब लोग परमात्मा से प्रार्थना करते हैं तो हाथ अथवा मुख ऊपर की ओर ही उठाते हैं क्योंकि जाने-अनजाने यह

स्मृति मानो सभी धर्मों वाली आत्माओं में समाई हुई है कि परमपिता परमात्मा ऊपर ही निवास करते हैं। परम-आत्मा का निवास स्थान होने के कारण यह परमधाम नाम से भी प्रसिद्ध है।

यहाँ पर एक भ्रान्ति जो दूर करने की आवश्यकता है कि प्राय: लो ब्रह्म-तत्व को ही परमात्मा मान बैठे हैं जो वास्तव में परमात्मा अथव आत्माओं का रहने का स्थान है। जिस प्रकार प्रत्येक चमकने वाली वस सोना नहीं हो सकती (All that glitters is not gold) इसी प्रक प्रकाशवान् ब्रह्म-ज्योति जो कि अचैतन्य तत्व है, उसे ज्योतिस्वरूप चैतन परमात्मा मानना बहुत बड़ा भ्रम है, अत: ब्रह्म को परमात्मा मानना अथव "अहम्-ब्रह्मास्मि" या "सर्वंखलुविदम् ब्रह्म तत्व" से योग लगाने वा आत्माएँ शक्तिशाली अथवा पावन नहीं बन सकीं क्योंकि अचैतन्य वस्तु उन चैतन्य आत्माओं को शक्ति मिल भी क्या सकती थी?

शिवरात्रि अथवा परमात्मा का दिव्य जन्म

शिव अर्थात् कल्याणकारी नाम परमात्मा का इसलिए है, क्योंकि व



धर्मग्लानि के समय, जब मनुष्यात्माएँ माया (पाँच विकारों) के कारण दु:खी, अशान्त, पतित एवं भ्रष्टाचारी बन जाती है तो उनको पुन: पावन अथवा एक रस बनाने का कल्याणकारी कर्त्तव्य करते हैं। परमात्मा ब्रह्मलोक में निवास करते हैं तो वह उनकी र्निसंकल्प तथा निष्क्रिय (कर्म-रहित) अवस्था होती है। अत: परमात्मा को भी कर्म-भ्रष्ट संसार का उद्धार करने के लिए ब्रह्मलोक से नीचे उतर कर किसी साकार शरीर का आधार लेना पड़ता है। वह किसी विशेष जीवित साधारण वृद्ध-तन में प्रवेश करते हैं। परमात्मा शिव के इस अवतरण अथवा दिव्य एवं अलौकिक जन्म की पुनीत स्मृति में ही शिवरात्रि अर्थात् शिवजयन्ती का त्योहार मनाया जाता है। यह त्योहार भारत में ही विशेष धूमधाम से मनाया जाता है। क्योंकि भारत भूमि ही परमात्मा के जन्म तथा कर्म की पावन भूमि है।

शिवरात्रि का त्योहार फाल्गुन मास, जो चैत्र बदी वर्ष का अन्तिम मास होता है, में आता है। उस समय कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को पूर्ण अन्धकार होता है। उसके पश्चात् शुक्ल पक्ष का आरम्भ होता है और कुछ ही दिनों बाद नया संवत् आत्माओं के अज्ञान-अंधकार, विकार अथवा आसुरी लक्षणों की पराकाष्ठा के अन्तिम चरण का द्योतक है। इसके पश्चात आत्माओं का शुक्ल पक्ष अथवा नया कल्प प्रारम्भ होता है अर्थात् अज्ञान और दु:ख के समय का अन्त होकर पवित्र तथा सुख का समय शुरू होता है।

परमात्मा शिव अवतरित होकर अपने ज्ञान, योग तथा पवित्रता द्वारा आत्माओं में आध्यात्मिक जागृति उत्पन्न करते हैं। इसी महत्त्व के

फलस्वरूप भक्त लोग शिवरात्रि पर जागरण करते हैं। शिव और शंकर अन्तर न समझने के कारण, शंकर जी को मस्ताना योगी समझ स्वयं भी कृत्रिम रूप से मस्त बनने के लिए भाँग, चरस, गाँजा आदि का उ दिन खूब सेवन करते हैं। बेचारों को यह तो ज्ञान नहीं कि सच्ची मस्ती परमात्मा शिव से प्राप्त ज्ञानामृत प्राप्त करने से ही चढ़ती है। उस दिन प्राय लोग उपवास अथवा व्रत करते हैं। उपवास (उप – निकट, वास रहना)का वास्तविक अर्थ ही है परमात्मा के समीप हो जाना। अतः परमात से युक्त होने के लिए तो निर्विकारी बनने का अर्थात् पाँच विकारों को सेवन करने का व्रत लेने की आवश्यकता है।

साराँश में परमात्मा का परिचय

दिव्य नाम	:	त्रिमूर्ति शिव
दिव्य रूप	:	ज्योतिर्बिन्दु
निवास स्थान	:	परमधाम, ब्रह्मलोक
दिव्य गुण	:	ज्ञान के सागर, पवित्रता के सागर, प्रेम के सागर, शान्ति तथा आनन्द के सागर हैं।
दिव्य कर्त्तव्य	:	अनेक अधर्म विनाश तथा एक सत्य धर्म की स्थापना
अवतरण का समय	:	कलियुग के अन्त और सतयुग की आदि अर्थात् पुरुषोत्तम संगम युग।



संसार की सबसे बड़ी भूल

आज मनुष्य परमपिता परमात्मा को भूल गये हैं। वे परमपिता परमात्मा को न और रूप से न्यारा मानने के कारण अथवा सर्वव्यापी मानने के कारण योग-भ्रष्ट हो हैं। अत: वे पवित्रता, सुख तथा शान्ति के ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार से वंचित हैं। य मनुष्य-मात्र को यह ज्ञात होता कि शिव ही परमपिता परमात्मा है और गीता-ज्ञान उन्होंने ही दिया था तो आज यह भारत स्वर्ग-भूमि होती।



इस मनुष्य-सृष्टि की तुलना एक चक्कर से भी की जा सकती है जैसा कि चित्र स्पष्ट है। प्रत्येक मनुष्यात्मा जन्म-मरण के चक्कर में आती है। कोई भी मनुष्यात्मा ज मरण से न्यारी नहीं है। यहाँ तक कि सर्वगुण सम्पन्न श्री कृष्ण तथा श्रीराम ने भी लौकि जन्म लिया और शरीर के कलेवर को छोड़ा।

एक परमात्मा ही इस चक्कर से सदा न्यारे हैं, क्योंकि वह कर्मातीत है। इसलि एक परमात्मा ज्योतिबिन्दु शिव ही को 'मृत्युंजय', 'अमरनाथ' अथवा 'अकाल कहते हैं।

स्पष्ट है कि परमात्मा शिव जो ही जन्म-मरण के चक्कर से न्यारे हैं, के साथ लगाने से मनुष्य को इस चक्कर से मुक्ति की प्राप्ति, कलियुग के अन्त और सतयु आदि अर्थात् वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही हो सकती है।